बोध कथाएं

1 सच्चा भाव : सच्ची उपासना

'यदि तू मेरे पास आवेगा तो मैं तेरी दाढ़ी में कघी करूंगा, तेरे बालों से जुएं निकालूंगा, शरीर पर तेल मालिश करूंगा, अपनी दाढ़ी से तेरे पैर पोछूंगा, तू सोना चाहेगा तो तेरे लिए बिछौना बिछाऊंगा, तू बीमार पड़ेगा तो दिन-रात तेरी चाकरी में खड़ा रहूगा। ऐ मेरे अच्छे मालिक, तू मेरे पास आ, मैं तेरा गुलाम बनकर रहूंगा।' पर्वत की चोटी पर बैठा एक गड़रिया प्रभु से प्रार्थना कर रहा था।

तभी हजरत मूसा उधर से निकले और गड़रिये से बोले - 'रे मूर्ख, तू किससे बातें कर रहा था? खुदा के कहीं बाल होते हैं? वह सर्वशक्तिमान है, कहीं बीमार पड़ता है? और तेरे जैसे बेवकूफों की सेवा चाकरी की उसे जरूरत ही क्या?'

बेचारे गड़रिये ने हजरत से क्षमा मांगी। परन्तु जब हजरत मूसा स्वयं प्रार्थना करने लगे तो दिशा ने उत्तर दिया - 'मूसा, तुम्हें इतना भी पता नहीं कि सच्चा भाव ही सच्ची उपासना है। उस गड़रिये का सच्चा भाव था। तुमने उसे मना करके अपराध किया है।'

2 भगवान का बच्चा

विनोबा की माता के पास पड़ोसिन अपना लड़का छोड़कर कुछ दिन के लिए तीर्थ यात्रा को गई थी। विनोबा और पड़ोसी का लड़का समान स्नेह और सद्भाव के साथ एक ही घर में रहने लगे।

माता के व्यवहार में विनोबा ने कुछ अन्तर पाया। पड़ोसी के लड़के को वे घी से चुपड़कर रोटी देती थी और विनोबा को रूखी। इस भेदभाव का कारण एक दिन माता से वह पूछ ही बैठे।

माता ने स्नेह भरे शब्दों में कहा, 'बेटा, तू मेरा बच्चा है। पर दूसरा तो भगवान का बच्चा है। अतिथि को भगवान कहते हैं न। भगवान के और अपने बच्चे में कुछ तो अन्तर होना ही चाहिए।'

माता की विशाल सहृदयता पर विनोबा गद्गद हो गए। इसके बाद फिर उन्होंने कभी वैसी शिकायत नहीं की।

3 भेड़ों का गणित

अगर घर के आंगन में 10 भेड़े बन्द हों और उनमें से 'एक' छलांग लगाकर दीवार से बाहर चली जाए तो आंगन में कितनी भेड़ें शेष रहेंगी?' शिक्षक ने पूछा।

एक बच्चा जोर-जोर से हाथ हिलाने लगा।

शिक्षक ने कहा - 'अच्छा पहले तू ही बता', वह बोला - 'एक भी नहीं बचेगी'।

'पागल हुआ है, मैं कह रहा हूं दस भेड़ें भीतर हैं, एक छलांग लगा गई तो भीतर कितनी बचीं?

तुझे गणित बिल्कुल नहीं आता।'

वह बालक बोला - 'श्रीमान जी, गिनती भले ही न आवे पर भेड़ें मेरे घर में हैं, भेड़ों को मैं जानता हूं एक भेड़ छलांग लगा गई, तो सब लगा गईं। भेड़ गणित नहीं जानती, वे तो अनुकरण से जीती हैं।'

संकलनकर्ता : रामकुमार, आशुलिपिक हिन्दी

साभार : रोजगार डाइजेस्ट